Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 2 | Issue 3 | (July – Sep 2025)

विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' कृत 'माँ' उपन्यास में चित्रित वेश्या-जीवन

आकांक्षा राय [1], प्रो० प्रेमशंकर तिवारी [2]
[1] शोध -छात्रा, हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
[2] शोध -निर्देशक, हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

शोध-सार-

विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' प्रेमचंद युग के प्रमुख कथाकार हैं। अपने उपन्यासों में 'कौशिक' ने तत्युगीन समाज में व्याप्त स्त्री-विषयक समस्याओं का विस्तृत वर्णन किया है। वेश्यावृत्ति की समस्या उन्हीं समस्याओं में से एक है। 'माँ' उपन्यास में वेश्याओं के आडम्बरपूर्ण जीवन तथा वेश्यावृत्ति के दुष्परिणामों को दिखाकर 'कौशिक' ने पुरुष-समाज को सचेत करने का स्तुत्य प्रयास किया है। 'माँ' उपन्यास में 'कौशिक' द्वारा चित्रित वेश्या-जीवन की विशिष्टता यह है कि उन्होंने न केवल वेश्याओं के आडम्बरपूर्ण जीवन का वर्णन किया है, बल्कि वेश्याओं को एक साधारण स्त्री समझते हुए उनके मनोभावों को शब्द देने का भी प्रयास किया है। 'कौशिक' की मान्यता है कि कोई भी स्त्री स्वेच्छा से पतित नहीं होती, वरन् उसके ऐसा करने के पीछे बहुत से कारण होते हैं। 'कौशिक' वेश्या को हीन दृष्टि से नहीं देखते; वरन् उस कर्म को हीन दृष्टि से देखते हैं, जो एक वेश्या को परिस्थितियों से विवश होकर करना पड़ता है। यही कारण है कि भाव के धरातल पर 'कौशिक' एक साधारण स्त्री व एक वेश्या में कोई अंतर नहीं रखते। एक वेश्या के मनोभावों का भी वह उतनी ही सूक्ष्मता से वर्णन करते हैं, जितनी सूक्ष्मता से एक साधारण स्त्री के मनोभावों का।

मुख्य शब्द- वेश्या, वेश्या-जीवन, वेश्यावृत्ति, वेश्यावृत्ति-उन्मूलन, प्रेमचंद युग।

प्रस्तावना-

प्रेमचंदयुगीन कथाकारों में पण्डित विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' का नाम अग्रगण्य है। इनके उपन्यासों में सामान्यतया वे ही कथात्मक प्रवृत्तियाँ दिखाई पड़ती हैं, जो प्रेमचंद के उपन्यासों में हैं। 'कौशिक' ने कुल तीन उपन्यासों- 'माँ', 'भिखारिणी' तथा 'संघर्ष', की रचना की है तथा तीनों ही उपन्यासों के केंद्र में स्त्री को रखा है। यह एक सार्वभौमिक सत्य है कि कोई भी साहित्यकार अपने तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों से अछूता नहीं रहता। 'कौशिक' का जिस समय प्रादुर्भाव हुआ, उस समय समाज में स्त्री-संबंधी अनेक कुरीतियाँ व्याप्त थीं। यही कारण है कि तत्युगीन उपन्यासकार स्त्री समस्या और स्त्री पीड़ा पर लेखनी चलाने से स्वयं को नहीं रोक सके। "इस समय के उपन्यासकारों ने देखा कि सामाजिक दुरवस्था के कारण नारी की स्थिति अत्यधिक शोचनीय है। वह रूढ़ियों और बंधनों के बोझ से निष्प्राण हो उठी है। यदि अब भी उसकी समस्याओं को यथार्थ रूप में न समझा गया तो देश का आधा भाग प्रगति से वंचित रह जाएगा। इन लेखकों के मन में सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक दुर्व्यवस्थाओं के प्रति घृणा और विद्रोह की अग्नि सुलग रही थी। वह प्रचलित रूढ़ियों और अंधविश्वासों को तोड़ डालना चाहते थे। इसलिए उन्होंने नारी-जीवन की सारी विषमताओं का चित्रण इस प्रकार किया कि समाज की सहानुभूति मिल सके।"[1] प्रेमचंद पूर्व उपन्यासों में स्त्री का वर्णन केवल आदर्श रूप में किया जाता था तथा इन उपन्यासों का एकमात्र प्रयोजन स्त्रियों को उपदेश देना होता था। सर्वप्रथम प्रेमचंद ने स्त्री को आदर्श के आवरण से मुक्त कर उपन्यासों में स्त्री-जीवन का यथार्थ चित्रण करने का सफल उद्योग किया। डॉक्टर सुरेश सिन्हा के अनुसार- "उस नए युग में नारी के ऊपर से उस भौंडे, कृत्रिम और अविश्वासपूर्ण आवरण को उतार कर, जिसे प्रेमचंद पूर्व काल के उपन्यासकारों ने अपनी तथाकथित आदर्शवादिता एवं सुधारवादिता के जोश में आकर पहना दिया था और जिसके फलस्वरुप नारी का स्वरूप

बोझिल ही नहीं हो गया था, आडंबरपूर्ण और अविवेकपूर्ण सा प्रतीत होने लगा था, नारी की आत्मा को उसकी तमाम अच्छाइयों और बुराइयों के साथ प्रेमचंद ने पहली बार यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया।"[2] 'कौशिक' सहित प्रेमचंदयुगीन अन्य उपन्यासकारों ने भी प्रेमचंद की भाँति अपने उपन्यासों में स्त्री-जीवन का यथार्थ चित्रण करने का उद्योग किया है।

मूल आलेख-

'वेश्यावृत्ति' तत्कालीन समाज में स्त्री-जीवन से जुड़ी विकट समस्या थी। वेश्या को दुश्चरित्र समझा जाता था। उसके प्रति किसी के मन में न कोई सहानुभूति थी और न ही उद्धार की भावना। यहाँ तक कि पुरुष समाज को दूसरे दुराचारों से बचाए रखने के लिए वेश्या का होना आवश्यक मानते थे। 'माँ' उपन्यास में वेश्यावृत्ति का दुष्परिणाम दिखाकर 'कौशिक' ने पुरूषों को इस विकृति से दूर रहने का उपदेश दिया है। वेश्यागमन से न केवल स्वास्थ्य व धन की हानि होती है, वरन् वेश्यागामी व्यक्ति की पत्नी का जीवन भी नरक के समान हो जाता है। पति द्वारा उपेक्षा पाकर या तो एक पत्नी भटक जाती है या फिर मानसिक असंतोष और यातनाओं को सहते-सहते रोगग्रस्त होकर मृत्यु को प्राप्त होती है। 'माँ' उपन्यास में चुन्नी जैसे पात्र के माध्यम से 'कौशिक' ने इसी तथ्य की पुष्टि की है। अपने पति गोकुल के वेश्यागामी हो जाने के कारण ही चुन्नी क्षय-रोग से ग्रस्त हो जाती है और अंततः मृत्यु को प्राप्त होती है।

जब शंभूनाथ श्यामा (चुन्नी) को देखने आते हैं तब गोकुल प्रसाद से प्रश्न करते हैं -"गोकुलप्रसाद, श्यामा की यह दशा क्यों हुई जानते हो?

गोकुल प्रसाद बोला- "बीमारी के कारण हो गई।"

"बीमारी के कारण हो गई या तुम्हारी बदचलनी और उसके प्रति तुम्हारे विश्वासघात के कारण हुई।"[3]

चुन्नी को ऐसी दयनीय व मरणासन्न अवस्था में देखकर गोकुल को अपनी गलती का एहसास होता है। चुन्नी की मृत्यु के पश्चात् गोकुल श्यामनाथ से कहता है- "तुम्हारी भगिनी जैसी सुंदर पत्नी पाकर भी मैं इधर-उधर मुँह काला करता फिरा। वह देवी थी, इस अपमान को सहकर कैसे जीवित रह सकती थी। उसने अपने प्राण देकर मेरी आँखें खोल दी। और कोई उपाय न था। यदि उसकी मृत्यु न होती, तो मैं अब भी वैसा ही रहता।"[4]

'कौशिक' वेश्यावृत्ति को सामाजिक विकृति मानते हैं, परंतु वेश्याओं के प्रति उनकी भावनाएँ कोमल हैं। 'कौशिक' ने वेश्याओं की कुचेष्टाओं को बाह्य व्यवहार मात्र माना है, जो उन्हें सामाजिक व आर्थिक विवशता के कारण करना पड़ता है। इसीलिए 'कौशिक' ने इन कुचेष्टाओं की तह में छिपी सहज नारी-भावना एवं नारी-सुलभ गुणों को देखने का प्रयास किया है। वेश्या-जीवन का ऐसा चित्रण करने के पीछे 'कौशिक' का मंतव्य यह है कि वेश्या घृणित नहीं, उसका वह कर्म घृणित है, जो उसे परिस्थितिवश करना पड़ता है। "नहीं तो उसकी आत्मा भी उतनी ही पवित्र और महान हो सकती है जितनी किसी अन्य चरित्रवती नारी की। वह भी सच्चे एक-निष्ठ प्रेम की उतनी ही आकांक्षिणी हो सकती है जितनी कोई पतिव्रता।"[5] इस संदर्भ में प्रेमचंद ने भी 'सेवासदन' में लिखा है- "हमें उनसे घृणा करने का कोई अधिकार नहीं है। यह उनके साथ अन्याय होगा। यह हमारी ही कुवासनाएँ, हमारे ही सामाजिक अत्याचार, हमारी ही कुप्रथाएँ हैं, जिन्होंने वेश्या का रूप धारण किया। यह दालमण्डी हमारे ही जीवन का कलुषित प्रतिबिंब, हमारे ही पैशाचिक अधर्म का साक्षात्कार स्वरूप है। हम किस मुँह से उनसे घृणा करें।"

बहुत सी वेश्याएँ ऐसी होती हैं, जो अपने पास आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के मन को पहचान कर तदनुरूप व्यवहार और आचरण करती हैं। जो पुरुष उनके पास केवल अपनी कामवासना की तृप्ति के लिए आते हैं,

उनके प्रति उनके मन में तनिक भी प्रेम व आदर का भाव नहीं होता। वहीं एक सहृदय व्यक्ति को देखकर कभी-कभी वेश्या के मन की भी प्रसुप्त नारी-सुलभ कोमल भावनाएं जागृत हो उठती हैं और वे उस सहृदय व्यक्ति से प्रेम करने लगती हैं। 'माँ' उपन्यास में वेश्या बंदीजान के माध्यम से 'कौशिक' ने एक वेश्या के इन्हीं नारी-सुलभ कोमल भावनाओं को दिखाने का प्रयत्न किया है। जब श्यामनाथ बंदीजान के यहाँ तीन महीने तक नहीं जाते, तब बंदीजान को श्यामनाथ का यह व्यवहार कष्टप्रद लगता है। बंदीजान के अंतर्मन के भावों को शब्द देते हुए 'कौशिक' लिखते हैं- "बंदीजान के हृदय में इस समय वे ही भाव उत्पन्न हो रहे थे, जो एक स्त्री-हृदय में उस समय उठते हैं, जब प्रियतम किसी दूसरी स्त्री के अलकावलि-पाश में फँसकर निष्ठुर व्यवहार करने लगता है। बंदीजान वेश्या होते हुए भी स्त्री थी। वह सतीत्वहीन होते हुए भी अस्तित्व हीन नहीं थी। उसकी रुचि भी वैसी ही थी, जैसी एक स्त्री की स्वाभाविक रुचि होती है। ... इस समय बंदीजान को यही चिंता थी कि जहाँ तक संभव हो सके श्यामनाथ उसी के होकर रहें- किसी दूसरी स्त्री पर दृष्टि न डालें। किसी दूसरी स्त्री के साथ श्यामू बाबू के प्रेम-संबंध की कल्पना करने से उसके हृदय में सौतिया डाह उत्पन्न हो रहा था।"[6] 'कौशिक' की यह विशिष्टता है कि वह भाव के धरातल पर एक साधारण स्त्री व एक वेश्या में कोई अंतर नहीं मानते और यही कारण है कि वे एक वेश्या के अंतर्मन के भावों को भी उतनी ही सूक्ष्मता से देखते-परखते हैं, जितनी सूक्ष्मता से एक साधारण स्त्री के अंतर्मन के भावों को।

'कौशिक' ने जहाँ एक ओर वेश्या के कलंकित वेश में छिपी नारी की कोमल भावना का चित्रण किया है, वहीं दूसरी ओर उसकी प्रकट कुचेष्टाओं और हाव-भाव-प्रदर्शन का भी विस्तृत वर्णन किया। "अनेक सामाजिक, आर्थिक और परिस्थितिजन्य विवशताओं के कारण जब नारी को वेश्यावृत्ति स्वीकार करनी पड़ती है, तब वह उसी में अपना मन लगाने की चेष्टा करती है। धीरे-धीरे वह इसकी अभ्यस्त हो जाती है। जीविका का अन्य कोई साधन न होने के कारण उसको अपने इस कार्य में छल, कपट, झूठ और आडम्बर का सहारा लेना पड़ता है। यही इस वृत्ति की प्रकृति है, यही उसका पेशा है। बिना इन चेष्टाओं का सहारा लिए वेश्या बनकर भी उसकी जीविका की समस्या हल नहीं हो सकती।"[7] उपन्यास में 'कौशिक' ने वेश्याओं की इन कुचेष्टाओं का यथार्थ चित्रण किया है। यह वेश्याओं की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह जिस पुरुष के पास जितना अधिक धन देखती हैं, उसके प्रति उसके प्रेम-प्रदर्शन की मात्रा भी उतनी ही बढ़ जाती है तथा उस धनी व्यक्ति को फँसाने के लिए वे अनेक प्रकार के झूठ का सहारा भी लेती हैं।

विश्वनाथ व गोकुलप्रसाद के साथ जब श्यामनाथ भी बंदीजान के यहां पहुँचते हैं, तब बंदीजान की माँ को श्यामनाथ के रंग-रूप से उनके रइसी का पता चल जाता है। दूसरे दिन भी विश्वनाथ व गोकुल प्रसाद के साथ श्यामनाथ को देखकर बंदीजान की माँ कहती है- "या अल्लाह, जब से आपको चौक में घूमते देखा, तब से मछली की तरह तड़पती फिरती रही। कई बार कहा- आज अभी तक नहीं आए, क्या न आवेंगे। और मैं कहती थी कि आवेंगे जरूर।"[8] अपनी बात का श्यामनाथ पर असर होता देखकर बंदीजान की माँ पुन: कहती है- "अभी थोड़ी देर हुई, एक रईसज़ादे तशरीफ़ लाए थे, बड़े रुपए वाले हैं, लखपति आदमी; मगर इसने उनसे सीधे मुँह बात नहीं की।"[9] अपनी माँ के इस झूठ में उसका साथ देते हुए बंदीजान कहती है- "भई, हम अपनी इस आदत को क्या करें। हमारी तो जिससे मुहब्बत होती है, उसी से बातचीत करने को जी चाहता है। यों हँसा-बोला नहीं जाता; चाहे कोई लखपति हो या करोड़पति। हम तो मुहब्बत के भूखे हैं, रूपए के नहीं। रुपया लेकर हमें करना क्या है? जिस खुदा ने पैदा किया है, वह शाम तक खाने को देगा ही।" [10]

वेश्याएँ किस प्रकार अपनी मनमोहक भाव-भंगिमाओं द्वारा व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास करती हैं, इसका भी वर्णन 'कौशिक' ने बखूबी किया है। जब श्यामनाथ पहली बार बंदीजान के यहाँ जाते हैं, तब बंदीजान अपनी मनमोहक चेष्टाओं द्वारा श्यामनाथ का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने का प्रयत्न करती है- "बंदो अर्थात् अल्लहबंदी बातें करते जाती थी और श्यामू बाबू की ओर कटाक्ष-बाण छोड़ती जाती थी। कभी

सर से साड़ी ढलका दी कभी- ऊँह, आज मुआ जूड़ा ढीला बाँधा है, खुल-खुल जाता है कहकर जूड़ा खोल डाला और नागिन-सी चोटी को हिलाकर फिर से जूड़ा बाँधा। इसी प्रकार की अन्य मोहन चेष्टाएँ करती थी।"[11]

वेश्या-समस्या के चित्रण में 'कौशिक' का दृष्टिकोण सुधारात्मक रहा है, किंतु उनकी सुधार-भावना कोरी उपदेशात्मक न होकर क्रियात्मक है। वे प्रेमचंद की भाँति वेश्यावृत्ति उन्मूलन हेतु न तो किसी सेवासदन की स्थापना करते हैं और न ही कोई निषेधात्मक नियम ही लागू करते हैं, क्योंकि 'कौशिक' की यह मान्यता है कि मात्र उपदेश देने से बुराई दूर नहीं होती। 'कौशिक' के शब्दों में- "प्रत्येक जाति के धर्म में बुरी बात बुरी ही कही गई है और बुरी बातों से बचने के लिए उपदेश भी यथेष्ट हैं; तो जब उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता, तो उन नेताओं तथा उपदेशकों का प्रभाव क्या पड़ सकता है, जिनकी देश-भक्ति, नेतृत्व, सुधार-योजना मंच पर से उतरते ही समाप्त हो जाती है। ऐसे लोगों के व्याख्यान और उपदेश से लोग सुधरने लगें, तो मैं दावे के साथ कहता हूँ कि एक वर्ष में ही संसार की कायापलट हो जाए।"[12]

राधाकांत के माध्यम से वेश्यावृत्ति जैसी समस्या का समाधान प्रस्तुत करते हुए 'कौशिक' कहते हैं - "आवश्यकता इस बात की है कि आप स्वयं बुराई के अंदर गोता लगावें, और उसकी तह में जाकर उसकी जड़ को काटें। बुरे लोगों से हिलें-मिलें, उनमें घुल-मिल कर उनकी बुरी चेष्टाओं में बाधा डालें, उनके मित्र बनकर उनको बुरे काम से बचाने में सहायता दें। आवश्यकता पड़े, तो इसमें धन भी खर्च करें। तब कुछ सुधार हो सकता है।"[13]

उपन्यास में शंभूनाथ व राधाकांत उपर्युक्त सभी बातों को चरितार्थ भी करते हैं। बेगम साहिबा को आर्थिक सहायता देकर उनकी दोनों बेटियों, कमरूनिस्सा व शम्सुनिस्सा, को वेश्यावृत्ति की राह पर जाने से बचा लेते हैं। शंभूनाथ व राधाकांत के इस उद्योग के माध्यम से 'कौशिक' समाज के उन व्यक्तियों पर करारा व्यंग्य करते हैं, जो वेश्यावृत्ति उन्मूलन हेतु केवल सुधार-सुधार की रट लगाते हैं किन्तु व्यवहारिक धरातल पर कुछ नहीं करते।

'सेवासदन' में प्रेमचंद वेश्यावृत्ति उन्मूलन हेतु कुछ निषेधात्मक नियमों की स्थापना करते हैं। उनमें से एक है- "वेश्याओं का नाच कराने के लिए एक भारी टैक्स लगाया जाए और ऐसे जलसे किसी भी हालत में खुले स्थानों में न हों।" अप्रत्यक्ष रूप से प्रेमचंद वेश्याओं द्वारा किए जाने वाले नाच-गानों को बंद कराने की बात करते हैं। 'कौशिक' की मान्यता है कि नाच-गाना बंद कराने से वेश्यावृत्ति घटेगी नहीं, वरन् और बढ़ जाएगी। अल्लहबंदी की माँ के माध्यम से 'कौशिक' इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि जब से नाच-गाना बंद हुआ है, तब से वे वेश्याएँ भी क़सब (देह-व्यापार) करने लगी हैं, जो पहले सिर्फ नाच-गाने का पेशा करती थीं- "पहले सैकड़ों रंडियाँ सिर्फ़ नाच-गाने का ही पेशा करती थीं, क़सब करने के पास भी न भटकती थीं। किसी एक शख्स से ताल्लुक़ हो जाता था, उसी के साथ उम्र कट जाती थी। मेरी वाल्दह तमाम उम्र में सिर्फ़ दो आदमियों के पास रहीं, तीसरे का मुँह नहीं देखा। इसकी वजह यह थी कि नाच-गाने से काफ़ी आमदनी रहती थी; उन्हें इस बात की जुरूरत ही न रहती थी कि क़सब करें। और न किसी की यह हिम्मत पड़ती थी कि कोई उनसे इस बात की दरख्वास्त करे। अगर किसी ने हिम्मत करके कुछ कहा भी तो साफ़ इनकार। ...पहले सौ रंडियाँ होती थीं, तो उनमें से 20 -25 सिर्फ गाने का पेशा करती थीं, और बाकी अपना क़सब करती थीं; मगर अब जिस शहर में 100 रंडियां हैं, तो वे सब-की-सब क़सब ही करती हैं। करें क्या, बिना इसके काम ही नहीं चलता। अब बताओ, यह रंडीबाज़ी बढ़ने के आसार (लक्षण) हैं या घटने के। ऐयाशी नाच बंद होने से थोड़ा ही बंद हो सकती है। ऐयाशी तो तब बंद हो, जब लोगों को रंडी की जुरूरत ही महसूस न हो।"[14] अल्लहबंदी की माँ के उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि 'कौशिक' वेश्यावृत्ति के उन्मूलन हेतु पुरुषों के आत्मसुधार पर बल देते हैं ।

बेगम साहिबा व उनकी लड़कियों के प्रसंग के माध्यम से 'कौशिक' यह भी दिखाने का प्रयत्न करते हैं कि किस प्रकार परिस्थितियों से विवश होकर किसी स्त्री को वेश्या-जीवन अपनाना पड़ता है। कोई भी स्त्री स्वेच्छा से

पतित होना स्वीकार नहीं करती, वरन् उसे विपथगामिनी बनाने में पुरुषों की लंपटता ही न्यस्त रहती है। बेगम साहिबा पेशे से वेश्या नहीं, बल्कि वह एक शाही खानदान से ताल्लुक रखने वाली शरीफ़ औरत हैं। छ: महीने तक उनका व उनकी लड़कियों का वसीक़ा न मिलने के कारण वह आर्थिक तंगी की शिकार हो जाती हैं। उन्हें दैनिक खर्च के लिए दो सौ रूपयों की जरूरत रहती है, इसलिए वह किसी व्यक्ति से दो सौ रुपए उधार लेने की इच्छा छुट्टन के समक्ष व्यक्त करती हैं। परंतु छुट्टन बेगम साहिबा की इस जरुरत को अपनी दलाली हेतु एक अवसर की तरह देखता है। इस संदर्भ में बेगम साहिबा से पहली भेंट के बाद छुट्टन और विश्वनाथ के मध्य हुआ यह संवाद द्रष्टव्य है-"छुट्टन- बहुत अच्छा, मगर इतना बता दीजिए कि तबीयत कुछ खुश हुई या नहीं।"

विश्वनाथ- वैसे तो तबीयत बहुत खुश हुई, मगर इतने से क्या होता है।

छुट्टन- घबराइए नहीं, आज तो पहला ही रोज़ था।"[15]

गोकुल प्रसाद व विश्वनाथ के मध्य हुए संवाद से भी छुट्टन व विश्वनाथ की दूषित प्रवृत्ति का पता चलता है- "विश्वनाथ- अरे मामला कुछ नहीं, इस मकान में एक बेगम साहिबा रहती हैं। उनको कुछ रुपयों की जरूरत है, कर्ज़ चाहती हैं। इस आदमी ने मुझसे जिक्र किया और यह भी बता दिया कि शिकार अच्छा है और जल्दी जाल में फँस सकता है। बस, इसीलिए हम लोग आए हैं।"[16] यह एक सामाजिक विडंबना है कि जिस घर में कोई पुरुष नहीं होता, उस घर की स्त्रियों को लोग खुली तिजोरी समझते हैं। अगर कोई व्यक्ति ऐसी स्त्रियों की मदद के लिए आता भी है तो यही सोचकर कि वह मदद के एवज में इन स्त्रियों से कोई लाभ लेगा। बेगम साहिबा भी इस सामाजिक विडंबना से अनभिज्ञ नहीं रहती हैं। यही कारण है कि वह अपनी लड़कियों को विश्वनाथ इत्यादि के सामने आने की इजाज़त दे देती हैं क्योंकि वह भलीभाँति जानती हैं कि उनकी लड़कियों के ही बहाने वे लोग कुछ आर्थिक सहायता कर देंगे। इस संदर्भ में बेगम साहिबा का यह कथन द्रष्टव्य है- "मगर बेटा, बात यह है कि ये लोग मालदार हैं, इनसे चार पैसे का फ़ायदा होने की उम्मीद है। इसलिए ज़रा देर बैठने-उठने में अपना कुछ बनता बिगड़ता नहीं। हमें उनसे कोई रिश्ता थोड़ा ही जोड़ना है।"[17]

इस प्रकार हम देखते हैं कि 'कौशिक' ने वेश्यावृत्ति के जिन बाह्य एवं आंतरिक कारणों पर प्रकाश डाला है, उनमें कुसंस्कार व अर्थ-जनित कारण ही प्रमुख हैं। उपन्यास में वेश्याओं और उनके पेशे से जुड़े लोगों का चित्रण देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि इस परिवेश के चित्रण के लिए 'कौशिक' ने इस परिवेश को बहुत गहराई से देखा-परखा था तथा इस परिवेश का बहुत सूक्ष्मता से अध्ययन किया था।

प्रस्तुत शोध-अध्ययन का महत्व-

'कौशिक' कृत 'माँ' उपन्यास की गणना वेश्यावृत्ति को केन्द्र में रखकर लिखे गए उपन्यासों में की जाती है। प्रस्तुत शोध-पत्र के माध्यम से 'माँ' उपन्यास में 'कौशिक' द्वारा वर्णित वेश्या-जीवन को पाठकों के समक्ष लाने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध-पत्र की सहायता से प्रेमचंद युगीन समाज में वेश्याओं की स्थिति तथा वेश्या-जीवन व वेश्यावृत्ति को लेकर 'कौशिक' के विचारों को बखूबी समझा जा सकता है।

संदर्भ सूची-

1. बिन्दु अग्रवाल, हिन्दी उपन्यास में नारी-चित्रण (1870-1950 ई०), राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1968, पृष्ठ संख्या- 29
2. रीता दास राम, नवभारत टाइम्स में प्रकाशित आलेख- स्त्री-विमर्श के आलोक में प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी, जनवरी 2016

3. विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक', माँ, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2016, पंचम् संस्करण, पृष्ठ संख्या-326
4. वही, पृष्ठ संख्या-329
5. बिन्दु अग्रवाल, हिन्दी उपन्यास में नारी-चित्रण (1870-1950 ई०), राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1968, पृष्ठ संख्या- 110
6. विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक', माँ, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2016, पंचम् संस्करण, पृष्ठ संख्या-221-222
7. बिन्दु अग्रवाल, हिन्दी उपन्यास में नारी-चित्रण (1870-1950 ई०), राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1968, पृष्ठ संख्या - 112
8. विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक', माँ, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2016, पंचम् संस्करण, पृष्ठ संख्या-101
9. वही, पृष्ठ संख्या -101
10. वही, पृष्ठ संख्या -101
11. वही, पृष्ठ संख्या -95
12. वही, पृष्ठ संख्या -245
13. वही, पृष्ठ संख्या -246
14. वही, पृष्ठ संख्या -228
15. वही, पृष्ठ संख्या -153-54
16. वही, पृष्ठ संख्या - 148
17. वही, पृष्ठ संख्या - 238